जल चर्चा

September 2019

Save Water

NMCG pavilion at the World Water Week, Stockholm

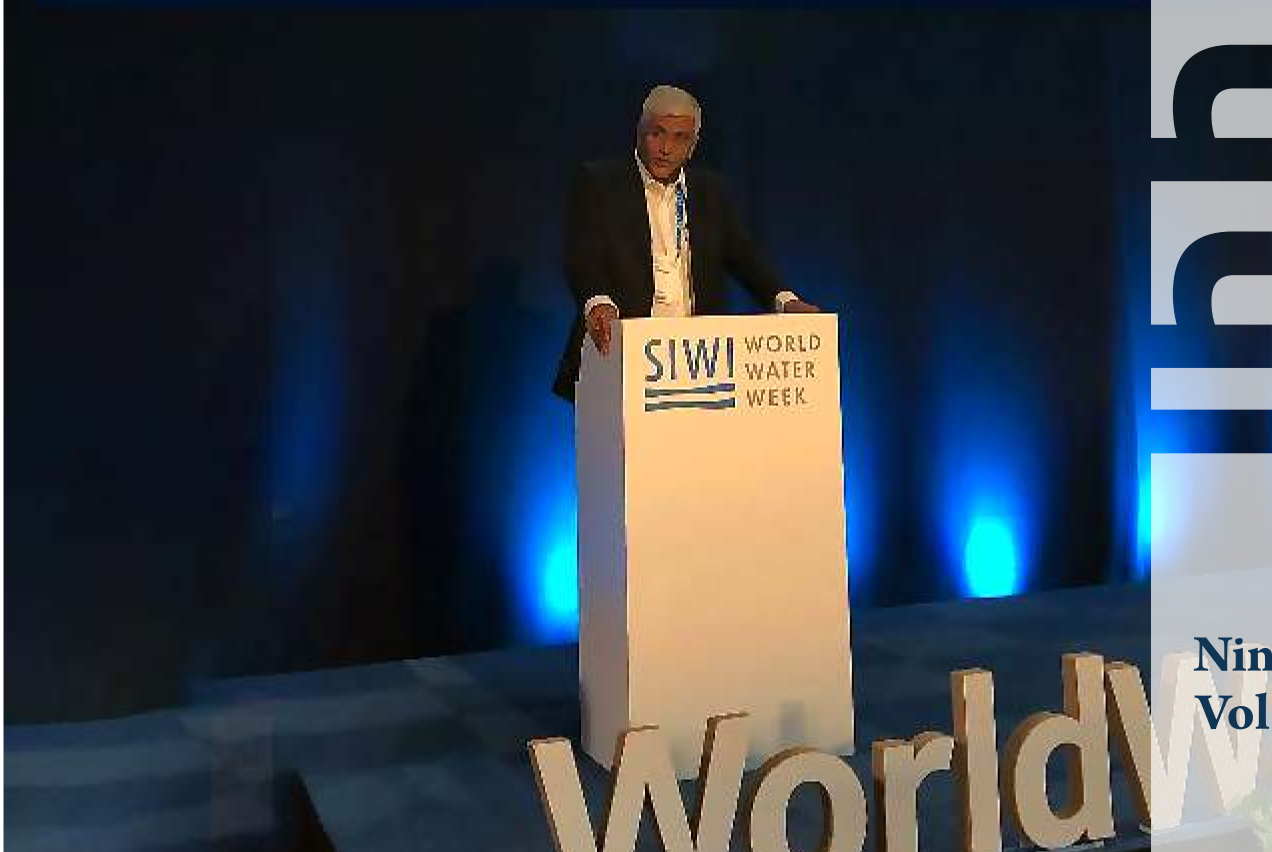

Ninth Issue
Vol. 1. No. 9

जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग
MINISTRY OF JAL SHAKTI
DEPARTMENT OF WATER RESOURCES, RIVER DEVELOPMENT & GANGA REJUVENATION

सत्यमेव जयते
जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग
MINISTRY OF JAL SHAKTI
DEPARTMENT OF WATER RESOURCES,
RIVER DEVELOPMENT & GANGA REJUVENATION

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

NHP

2nd International Conference on
Sustainable Water Management

under the aegis of
NATIONAL HYDROLOGY PROJECT
Ministry of Jal Shakti, Department of Water Resources, River Development & Ganga Rejuvenation, Government of India

6-8 November 2019, Pune, Maharashtra, India

Water Resource Department, Govt. of Maharashtra

Plenary
Paper Presentations
Poster Presentations
Exhibitions

Technical Sessions
Industry Sessions
Cultural Programs
Study Tour

Contact
National Hydrology Project

MDSS (MTNL) Building, Rear wing, 2nd Floor,
9,CGO Complex, Lodhi Rd, New Delhi 110003
Call:+91 11-24369543 , +91 11-24367081, +91 11-24363417
Email: nhp-mowr@nic.in, Website: nhp.mowr.gov.in
Conference Website URL:
http://nhp.mowr.gov.in/II_Conference/index.html (under construction)

Contents

मुख्य संपादक की कलम से	2
माही नदी	3
Know Your Dam - Nagarjuna Sagar	4
Angioplasty in Water Conservation	5
जल योद्धा	6
Groundwater Profile - Bihar	7
6th Water Talk by National Water Mission	8
Groundwater Irrigation Projects in Assam, AP and Gujarat	9
Jal Shakti Abhiyan	10-11
PMKSY	12
मन की बात	13
International	14
Know Zone	15
Namami Gange	17
The Great Ganga Run	18
6th India Water Week 2019	19
News In Brief	20-24
Snippets	25
मेरा नदियों का सफर	26
In Newspaper	27
Institute	28

VOL.1. NO.9

Chief Editor : U.P. Singh
Editor : Nitishwar Kumar
Co-Editor : Girraj Goyal
Sub - Editor : Mohit Sharma
Design & Comm. Team : Fusion Corporate Solutions Pvt. Ltd.
Photographer : Arvind Singh Tomar
Publisher : Amit Kumar Singh
[as Under Secretary (IEC), Ministry of Jal Shakti, Do WR, RD & GR Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi -110001]
Printer : Krishna Enterprises
2070/5, Chuna Mandi, Paharganj, New Delhi - 110055

Reproduction in any form is prohibited without written permission. Any dispute related to the content of the magazine should be addressed to the publisher.

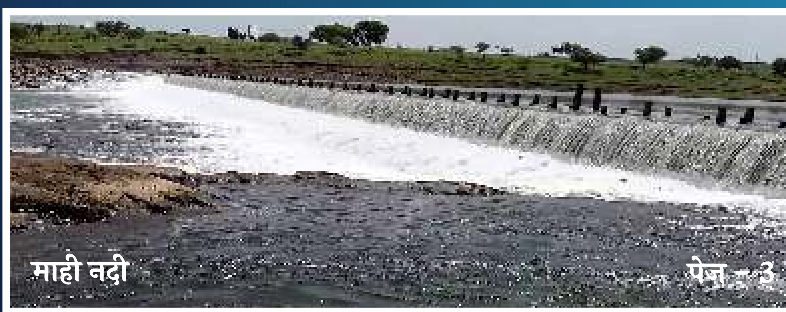
माही नदी
पेज – 3

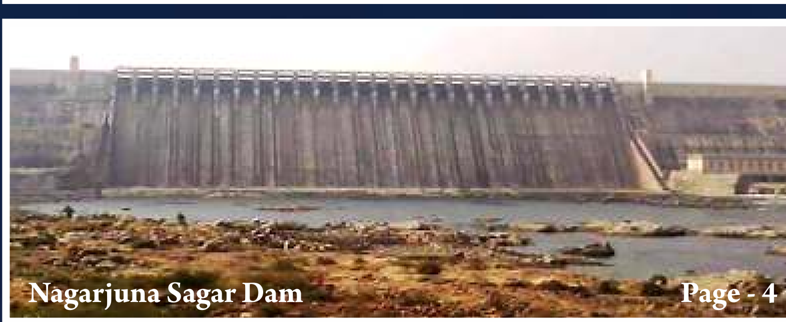
Nagarjuna Sagar Dam
Page - 4

Please write your letters and suggestions to **media-mowr@nic.in**

Website: jalshakti-dowr.gov.in | Facebook: www.facebook.com/mowrrdgr | Twitter: twitter.com/mowrrdgr

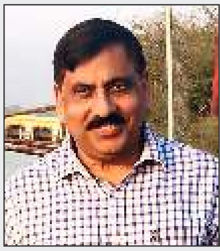

मुख्य संपादक की कलम से

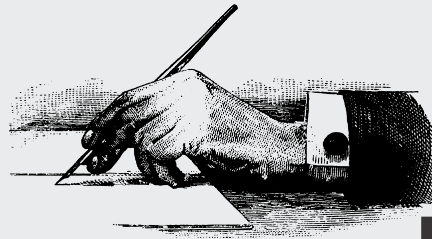

It gives me immense pleasure to present to you the September issue of 'जल चर्चा', our monthly news magazine.

As we all know, monsoon is so crucial for the Indian economy. At the beginning of the monsoon season this year, IMD predicted a normal monsoon. However, monsoon set in late and its progress in the initial period was also very tardy. The first monsoon month, June, witnessed a rainfall deficiency of around 36%. However, by the time monsoon season came to an end we had received more than normal rainfall. Usually, monsoon withdraws from all parts of the country by end of September, but this year monsoon rains continued in October as well. Water availability in most of the reservoirs in the country is much better as compared to previous years. It augurs well, especially for Rabi crops.

However, the impact of climate change is quite palpable if we look at the rainfall pattern this year. Distribution of rainfall over time and space is becoming more skewed. The number of 'rainy days' are reducing. Some of the regions of the country, which are known for scanty rainfall received, very heavy rainfall, concentrated over a few days. Consequently, some areas in Maharashtra, Rajasthan & Gujarat suffered from floods. These areas usually suffer from water scarcity. We need better adaptation & irrigation strategies to cope with the impact of climate change as extreme events like floods & droughts are likely to occur with more frequency and intensity in future.

The first phase of Jal Shakti Abhiyan ended on 30th September 2019. Jal Shakti Abhiyan has succeeded in bringing the water conservation issues to the fore. A number of success stories and innovative solutions from all parts of the country have come to our notice through large number of senior officers who were deputed to the water-stressed districts of the country. It is a challenge for all of us to build on this momentum.

The month of September witnessed a large number of activities by our Ministry. 6th India Water Week was held from 24th to 28th of September, which saw large participation of various stakeholders from India as well as abroad. The theme of the week this year was "Water Co-operation – Coping with 21st Century Challenges".

1st National Water Mission Awards were presented in various categories to those who have done exemplary work towards five goals of National Water Mission.

The Great Ganga Run, organized by National Mission for Clean Ganga on 15th September with an aim to create awareness for water conservation and rivers in general and Ganga, in particular, saw a huge response from Delhi'ites.

'Swachhta Hi Sewa' campaign saw a number of activities all over the country. The special emphasis continued on cleanliness drives on various Ghats of Yamuna. Shri Gajendra Singh Shekhawat also participated in cleanliness drive at Kudesia Ghat on 26th September.

In this issue, we have tried to incorporate a number of educative and informative articles. While we are trying our best to make every issue interesting as well as informative, your feedback about the magazine will certainly help us to make it better.

On behalf of Jal Shakti pariwar, we wish you a happy and prosperous Deepawali.

"यदि अंधकार से लड़ने का संकल्प कोई कर लेता है,
तो एक अकेला जुगनू भी सब अंधकार हर लेता है।"

शुभेच्छाओं सहित
(उपेंद्र प्रसाद सिंह)

माही नदी

भारत नदियों का देश है। इसके आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास में प्राचीन काल से ही नदियों का महत्वपूर्ण योग दान रहा है। आज भी देश की सर्वाधिक जनसंख्या और उसकी खेती-बाड़ी नदियों पर ही आश्रित है। नदियों के अनंत काल तक बहने के लिए पेड़-पौधों का होना आवश्यक है। प्राचीन काल में अधिकांश नगर यातायात एवं व्यापारिक सुविधा के लिए नदियों के किनारे बसे हुए थे और आज भी देश के अधिकांश धार्मिक स्थल किसी-न-किसी नदी से जुड़े हुए हैं। आज इसी क्रम में हम बात करेंगे, आदिवासियों की जीवन रेखा एवं दक्षिणी राजस्थान की स्वर्ण रेखा कही जाने वाली माही नदी की।

माही नदी दूसरी बारहमासी नदी है, जिसका उद्गम मध्य प्रदेश के धार जिले के सरदारपुरा के मिंडा गाँव के निकट विन्ध्याचल की पहाड़ियों में स्थित मेहद झील से होता है। माही नदी को लोग वागड़ की गंगा, कांठल की गंगा, दक्षिण राजस्थान की स्वर्ण रेखा और आदिवासियों की गंगा के नाम से भी पुकारते हैं। माही बेसिन 39,556 वर्ग किमी के क्षेत्र में फैला हुआ है और यह देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 1.2% है। अंग्रेजी के उलटे 'U' के आकार की माही नदी का बेसिन राजस्थान (42.05%), गुजरात (39.91%) और मध्य प्रदेश (18.04%) में स्थित है। माही नदी मध्य प्रदेश के झाबुआ और रतलाम जिले से गुजरते हुए राजस्थान के बांसवाडा जिले के खादू गाँव में प्रवेश करती है और प्रतापगढ़ और डूंगरपुर जिले के सीमावर्ती भाग में बहते हुए दक्षिण की ओर मुड़ जाती है। अंत में यह गुजरात में खम्भात की खाड़ी (अरब सागर) में समा जाती है। राजस्थान में बांसवाडा व प्रतापगढ़ के बीच माही नदी के प्रवाह क्षेत्र में 56 गाँव स्थित है। इस क्षेत्र को छप्पन का मैदान कहते हैं। भारत में माही नदी की कुल लम्बाई 538 किलोमीटर है।

यह नदी राजस्थान के डूंगरपुर तथा बांसवाडा जिलों के बीच से गुजर कर सीमा बनाती है। राजस्थान के डूंगरपुर जिले में माही नदी के तट पर गलियाकोट का उर्स लगता है। डूंगरपुर जिले की आसपुर तहसील के नवाटपुरा गाँव में सोम, माही व जाख़म तीनों नदियों का त्रिवेणी संगम स्थित है। इसी संगम स्थल पर बेणेश्वर धाम स्थित है। बेणेश्वर धाम की स्थापना संत मावजी ने की थी, जिनकी याद में प्रतिवर्ष महा पूर्णिमा के दिन मेला लगता है। इस मेले को आदिवासियों का कुम्भ तथा बागड का पुष्कर भी कहा जाता है।

इरु, सोम, जाखम, अनास, हरण, चाप, मोरेन व भादर नदी, माही नदी की सहायक नदियाँ हैं। इरु नदी माही नदी में माही बांध से पहले मिल जाती है तथा शेष सभी सहायक नदियाँ माही बांध के बाद इसमें आकर मिल जाती हैं। चाप नदी व अनास नदी माही नदी में बायीं तरफ से तथा शेष सहायक नदियाँ दायीं ओर से माही नदी में मिलती है।

सोम माही नदी की दाहिनी सहायक नदी है। यह उदयपुर में ऋषभदेव के पास बबलवाडा के जंगलों में स्थित बीछामेडा की पहाड़ियों से निकलती है। उदयपुर व डूंगरपुर में बहती हुई डुंगरपुर के बेणेश्वर में माही नदी में मिल जाती है। इसकी कुल लम्बाई 121 किमी है।

जाखम नदी प्रतापगढ़ जिले में स्थित भंवरमाता की पहाड़ियों से निकलती है। प्रतापगढ़, उदयपुर, डूंगरपुर में बहती हुई डूंगरपुर के लोखल और बिलूर गाँव के निकट यह सोम में मिल जाती है।अनास और पानम दोनों नदियाँ माही नदी की बायीं सहायक नदियाँ है। अनास नदी मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले के पास विंध्य के उत्तरी ढलानों पर कलमोरा से एवं पानम नदी विंध्य के उत्तरी ढलानों पर भद्रा के पास से निकलती है। यह दोनों नदियां गर्मियों में सूख जाने वाली नदियाँ हैं। अनास और पानम नदी उत्तर पश्चिम दिशा में बहते हुए, राजस्थान के डूंगरपुर जिले में बायीं तरफ से आती हुई अनास माही नदी में समा जाती है और पानम नदी गुजरात के पंचमहल जिले में माही नदी के बाएं किनारे में मिल जाती है। अनास की कुल लम्बाई 167 किमी और पानम नदी की कुल लम्बाई 136 किमी है।

राजस्थान व गुजरात के मध्य माही नदी पर माही नदी घाटी परियोजना बनाई गयी है। इस परियोजना में माही नदी पर माही सागर बजाज और कडाना दो बांध बनाए गए है।

नदियाँ भारत का गौरव है, इन्हें सदैव जीवित रखने का दायित्व भारत के प्रत्येक नागरिक पर है। इन्हें जीवित रखने एवं बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं से बचने हेतु अधिक से अधिक पेड़ लगाए जायें। आइए हम सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग बंद करें ताकि नदियों को दूषित होने से बचाया जा सके। ■

Know Your Dam - Nagarjuna Sagar

About 124 m high and 1450 m long Nagarjuna Sagar dam is the world's largest masonary dam. It is constructed on River Krishna and is situated on the border of Nalgonda district in Telangana and Guntur district in Andhra Pradesh. The dam is a part of Nagarjuna Sagar Project intended to provide irrigation facilities to about 8.95 lakh hectares land situated in Guntur, Prakasam, Nalgonda, Khammam and Krishna districts of Andhra Pradesh and Telangana. It also produces about 960 MW of seasonal hydroelectric power, navigation facilities, development of pisciculture and providing recreation benefits besides mitigating the flood hazards. The construction of the project started in February 1956 and got completed in 1967.

To release flood water, Nagarjuna Sagar dam has 470.9 m long spillway or overflow section consisting of 26 radial crest gates with designed spillway capacity of 58340 cumec. The reservoir of Nagarjuna Sagar dam has gross storage capacity of about 11.55 BCM. The effective storage capacity of the reservoir is about 6.92 BCM.

Salient Features

- The Nagarjuna Sagar project is significant in contributing to the country's food production.
- The construction of Nagarjuna Sagar dam using stone masonry was the bold innovation in the field of high dam construction. Choice of stone masonry offered various advantages like less cost, less foreign exchange, less equipment & less use of scarce cement and large scope for employment.
- The remarkable feature of this project is that it is a symbol of self-reliance. No foreign advice or technical assistance was sought for the construction of this dam.

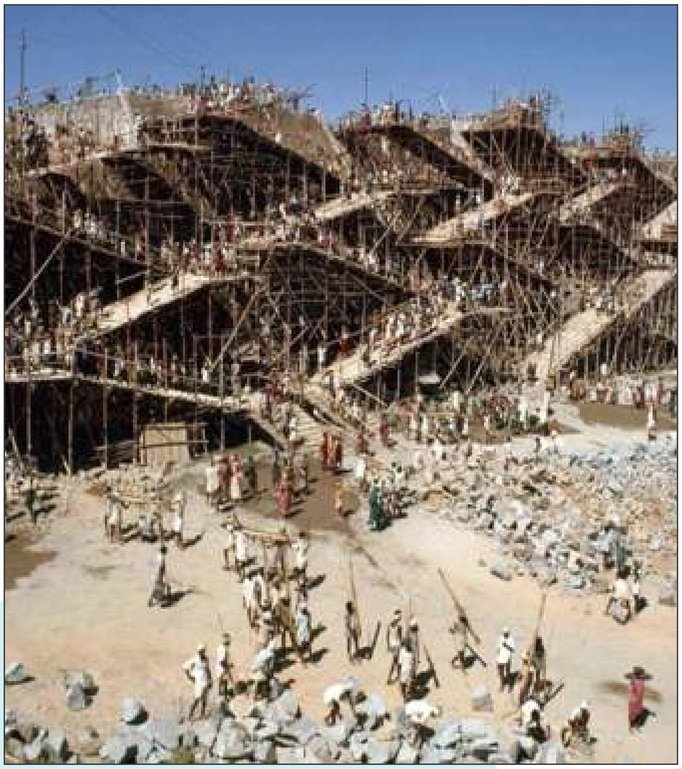

A view of under construction Nagarjuna Sagar Dam

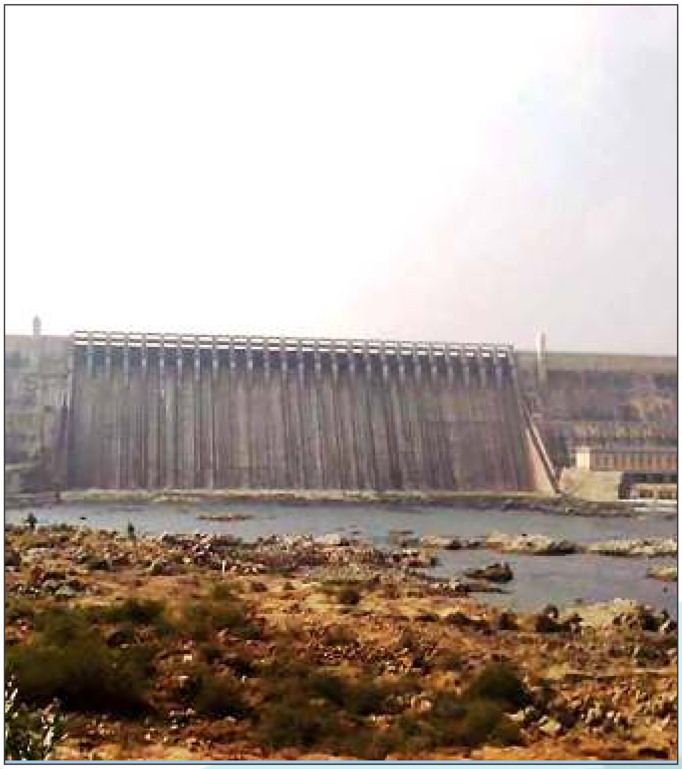

A view of Nagarjuna Sagar Dam from downstream side

Angioplasty in Water Conservation

- A tested model for drought-prone areas

The retirement plans of Mr. Suresh Khanapurkar, a former geologist, were interesting as he transformed the grim groundwater situation in Shirpur Teshil of Dhule district in Maharashtra into a unique water conservation model termed as "Angioplasty in Water Conservation."

About Shirpur Taluka

Geologically, one-third of the Shirpur taluka is covered by Tapi Alluvium and the rest is covered by Deccan Basalt aquifers (An aquifer is a body of saturated rock through which water can easily move). Alluvial aquifers typically occur adjacent to rivers and is composed of clay, silt, sand, gravel or similar unconsolidated material deposited by running water. Basaltic rocks aquifers are the most productive aquifers in volcanic rocks. Shirpur taluka, which had highly erratic rainfall and unevenly distributed surface water resources, depended highly on its groundwater resources for irrigation, drinking water and industrial purposes. Over time, its groundwater levels declined to alarming levels rendering the area water scarce. The groundwater based drinking water schemes were the first casualty. Due to overexploitation of groundwater resources, all the dug wells in the Tapi Alluvium in Shirpur taluka dried up. Drying of wells in the Alluvial belt and insufficient availability of water post December in the Basalt region were the main problems of Shirpur. This precarious situation led Mr. Khanapurkar to initiate a water conservation programme in the area.

Actions Taken

As part of this project which spanned over 14 years (2004-2018), as many as 210 check dams were built to enable the infiltration of water from 14 identified streams, which were widened and deepened up to 25 meters and 8 meters respectively in the Basalt and Alluvial areas. The check dams were made without gates and waste weir to augment huge storage of water based on ridge to valley approach.

Parallely, to recharge the deeper aquifers by using the surplus water of the dams through dug wells (of about 40-50 meters) which had dried, 65 cementbunds were constructed on all 14 streams. As many as 59 dried dug wells were recharged through this technique.

Impact

- Water table rose from 150 meters to 10 meters in Basalt hard rock aquifer.
- Water table rose from 150 meters to 30 meters in Alluvial formations.
- People had enough water to irrigate 2nd crop even after deficient rainfall for two consecutive years. Average per capita income increased at least by Rs 1 lakh/hectare.
- Drinking water problem of over 70 villages got solved.
- Energy consumption declined.
- Fishing started in many villages resulting in rise in the annual income of the farmers.

Total relief from both flood and water scarcity was possible within a time span of ten years. This model is worth emulating to be taken up on small streams in mini and micro watersheds anywhere in the country, especially in rain-fed and non-command areas.

जल योद्धा

अपने हिस्से की आक्सीजन और पानी हमें स्वयं बचाना होगा: जल रक्षक शुभजीत मुखर्जी

प्रकृति का सौन्दर्य जल, अग्नि, वायु, आकाश और भूमि इन पंच तत्वों के संतुलन में है। इन पंचतत्वों के असंतुलित होने से प्रकृति विनाशकारी रूप लेती है, जिससे सूखा, बाढ़, भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाएं उत्पन्न होती है। इसलिए हम सभी का दायित्व है कि पंच तत्व को असंतुलित न होने दें और इनके साथ खिलवाड़ न करें। अगर हम प्रकृति की देखभाल करेंगे तो वह हमारी देखभाल करेगी। ऐसी ही विचारधारा के साथ प्रकृति की देखभाल में लगे हैं हमारे जल रक्षक शुभजीत मुखर्जी, जिन्हें लोग टैंक मैन के नाम से भी जानते हैं। मुंबई के रहने वाले और मिशन ग्रीन मुंबई के संस्थापक शुभजीत मुखर्जी वर्षा जल संचयन के लिए टैंको का निर्माण कर एवं अधिक से अधिक वृक्षारोपण कर बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए लोगों को जागरुक कर रहे हैं। साथ ही उन्होंने वर्षा जल संचयन के लिए एक सरल एवं किफायती रेनवाटर हार्वेस्टिंग मॉडल को लागू किया है। आइए जल रक्षक शुभजीत मुखर्जी एवं उनकी इस मुहिम के बारे में जानते है:

पर्यावरण और जल संरक्षण के लिए आप कब और कैसे आगे आए?

जल रक्षक शुभजीत ने बताया की वर्ष 2010 में जब वह मुंबई में एक कम्पनी में कार्यरत थे तब उनका स्वास्थ्य काफी खराब रहने लगा और डॉक्टर ने उन्हें इस बीमारी की वजह पर्यावरण और वायु प्रदुषण बताया। तब इन्हें एहसास हुआ कि अपने हिस्से की आक्सीजन के लिए उन्हें खुद से पहल करनी होगी। इसके बाद उन्होंने पर्यावरण बचाने के लिए एक 'मिशन ग्रीन मुंबई' अभियान की शुरुआत की। जिसके अंतर्गत मुखर्जी ने अपने-अपने हिस्से की आक्सीजन के लिए लोगों को पेड़ लगाने के लिए जागरुक करना शुरु किया। इसी के तहत मुंबई महानगर क्षेत्र में स्थानीय, गैर-सरकारी संस्थानों और कंपनियों की सहायता से तक़रीबन 68000 पेड़ों का वृक्षारोपण किया गया। हम सब जानते है की पानी प्रत्येक पेड़-पौधों, जीव–जंतु और मनुष्य सभी के लिए अत्यंत आवश्यक है। इन पेड़ों को जीवित रखने के लिए पानी की आवश्यकता भी है। जिसके लिए शुभजीत ने बारिश के पानी को संचय करने के लिए लोगों को जागरुक करने का फैसला किया क्योंकि बारिश, पानी का एक बड़ा स्त्रोत है जो प्रकृति का अनमोल उपहार है।

वर्षा जल संरक्षण के लिए आप लोगों को कैसे जागरुक करते हैं और इसका लोगों पर क्या प्रभाव पड़ा?

सभी का एक साथ आना जलसंकट जैसी समस्या के लिए आवश्यक है। यह समस्या किसी एक की नहीं बल्कि सभी की है। इसलिए प्रत्येक नागरिक को अपना दायित्व निभाना होगा। वर्षा जल संरक्षण के लिए एक सरल और किफायती प्रणाली को इजाद किया। इस प्रणाली का उपयोग कैसे किया जाता है इसके लिए एक वीडियो बनाया और सोशल मीडिया पर साझा किया ताकि लोग इसे आसानी से लगा सके। इसके बाद मैंने स्थानीय लोगों को उनके घर परिसर और ऑफिस परिसर में इसे लगाने के लिए जागरुक किया। साथ ही मुंबई के 300 से अधिक विद्यालयों में जाकर छात्रों और शिक्षकों को भी इस प्रणाली से अवगत कराया। मेरा लक्ष्य है कि तक़रीबन 1000 विद्यालयों में वर्षा जल संचयन की प्रणाली लगाई जा सके ताकि विद्यालय में सफाई एवं पेड़-पौधों के लिए उपयोग होने वाले पानी की पूर्ति इस प्रणाली के माध्यम से की जा सके ।

वर्षा जल संचयन की इस प्रणाली को कैसे लगाया जाता है?

वर्षा जल संचयन की यह तकनीक काफी सरल है आप एक ड्रम के चारों ओर कुछ छेद बना दें, एक 3 फीट गहरे गड्ढे में ड्रम को जमीन में स्थापित कर दें फिर छत के पानी को ड्रम से जोड़ दें। गड्ढे के आसपास के क्षेत्र को कंकड़ से भरा जा सकता है, जो फिल्टर के रुप में भी काम करता है और ऐसा करने से कीचड़ ड्रम में प्रवेश करने से रुक जाता है। यह प्रक्रिया भूजल स्तर को बढ़ाने में मदद कर सकती है। बाद में पानी को ट्यूबवेल, बोरवेलों के माध्यम से कहीं भी पहुँचाया जा सकता है और इससे आसपास के तालाबों को भी भरने में मदद मिलती है। इस जल का उपयोग भवन की साफ़ सफाई और पेड़ पौधों की सिंचाई के लिए भी किया जा सकता है।

पर्यावरण और जल संरक्षण के लिए आप लोगों को क्या सन्देश देना चाहेंगे?

मैं चाहता हूँ कि भारत का प्रत्येक नागरिक अपने हिस्से की आक्सीजन और अपने हिस्से का पानी स्वयं बचाए। अपने हिस्से के पानी के लिए वर्षा जल संचयन कर पानी का सदुपयोग करें और आक्सीजन के लिए प्रत्येक नागरिक एक पेड़ लगाए। मैं आशा करता हूँ की सभी लोग पर्यावरण और जल संरक्षण के लिए एक साथ आएंगे और जल शक्ति अभियान को सफल बनाने में अपना योगदान देंगे। साथ ही सिंगलयूज प्लास्टिक का उपयोग बंद करेंगे और पर्यावरण एवं नदियों को दूषित होने से बचाएंगे।

Groundwater Profile - Bihar

Area (Sq.km)	94163
Rainfall (mm)	1030
Total Number of Districts	38

Hydrogeological Set Up

Hydrogeologically, the various litho-units of the State can be grouped as unconsolidated/alluvial formations, semi-consolidated formations and consolidated/fissured formations. The autoflow alluvial tract covers entire north Bihar and a sizeable area south of the Ganga River. These alluvial formations constitute **prolific aquifers** where the tubewell can yield between 120-247 m^3/hr. The potentiality of these aquifer decreases towards south in the marginal tract. The autoflow conditions occur in the sub-tarai region of Madhubani, Sitamarhi and West Champaran districts. In the hard rock areas of south Bihar, borewells located near lineaments/fractures can yield between 10-50 m^3/hr.

The summary of the dynamic groundwater resources, groundwater development, plan for artificial recharge to groundwater reservoirs, groundwater quality and groundwater regulation in the State of Bihar is given :

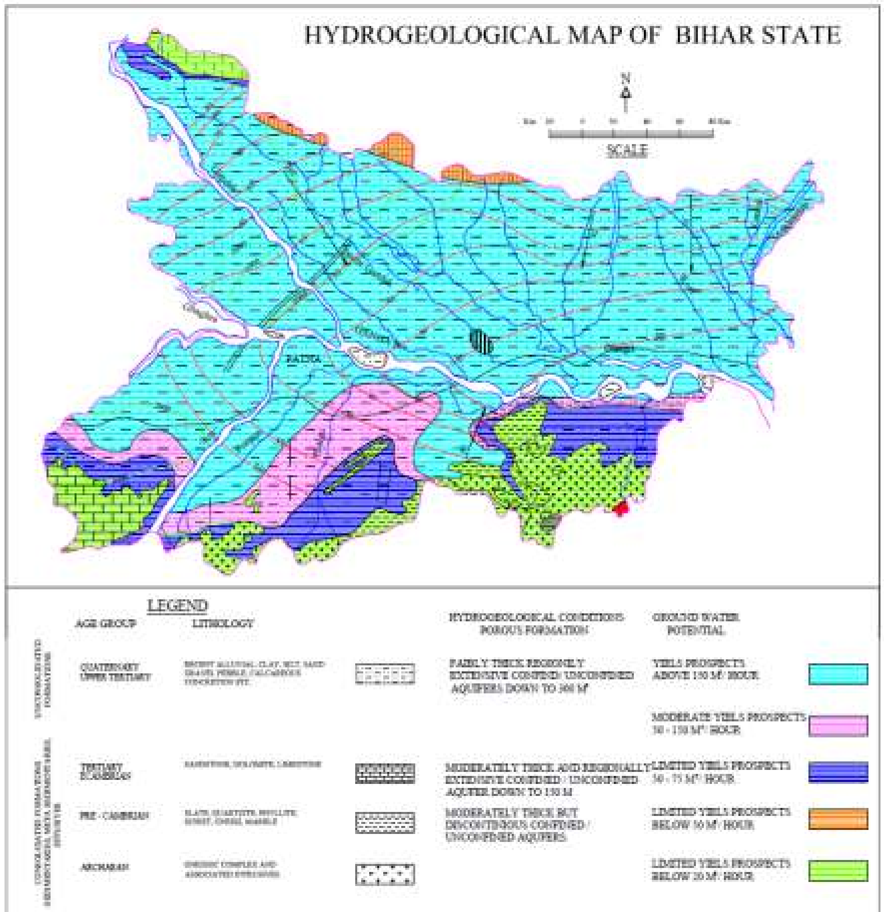

Dynamic Ground Water Resources	
Ground Water Assessment Units	534blocks
Annual Replenishable Groundwater Resource	31.41 BCM
Net Annual Groundwater Availability	28.99 BCM
Annual Ground Water Draft	13.26 BCM
Stage of Ground Water Development	45.76%
Ground Water Development & Management	
	Number of Assessment Units
Over Exploited	12
Critical	18
Semi- critical	72
Safe	432
Total	534
Artificial Recharge to Ground Water Reservoirs (AR)	The area identified for AR: 760.3 sq. km Volume of water to be harnessed: 83.14 MCM Volume of water to be harvested through Roof Top RWH : 83.14 MCM Feasible Numbers of AR structures: • Percolation tank – 227 • Recharge Shaft- 118 • Roof Top RWH (House)- 95000 • RTRWH(Govt.&Inst.Buildings)- 5000

"Pure Water is the World's First and Foremost Medicine"
(Slovakian Proverb)

6th Water Talk by National Water Mission

The Sixth Water Talk was delivered on 23rd August, 2019 by Shri Popatrao Pawar, Sarpanch, Hiware Bazar, Maharashtra and Shri Umakant Umrao (IAS), Secretary, P&RD Dept. Government of Madhya Pradesh. Shri U.P. Singh, Secretary, Do WR, RD & GR, Ministry of Jal Shakti, Shri Rajiv Ranjan Mishra, DG, NMCG and officers from CWC, CGWB, NMCG, CSMRS, NWDA and D/o WR, RD & GR attended the programme.

Shri Popatrao Pawar

Shri Popatrao Pawar delivered the talk on "Hiware Bazar – A Water Budgeting Model" and discussed the dynamics of the village system and its governance. He said that good governance is required for proper and sustainable management of natural resources in villages. Starting from the 1980s when Hiware Bazar village faced acute water shortage resulting in mass migration, Shri Pawar narrated his personal journey alongside the village's and how he was able to change the face of the village and convert it into an "Adarsh Gram" with the help of villagers. The five years planning for period of 1990-95 was done by the village Panchayat after he was given the lead role. He explained how concepts like water budgeting and management were brought to the helm of the plans. He explained how they allowed bore wells for drinking purpose only and banned its consumption for irrigation. He said that there was complete ban on water intensive crops and it was not allowed to sell land to outsiders. The annual rainfall was collected by installing 3 rain gauge stations at sub basin level. Different water conservation measures were taken like creation of continuous contour trench (CCT), deep CCT, earthen bunds, percolation tanks, check dams, artificial aquifer blast and extensive plantation. As a result, there was considerable increase in water levels, increase in cropping intensity, increase in fodder availability and milk production. Families who migrated from the village came back. Due to economic gain, standard of living of villagers improved. Hiware Bazar soon became the learning center for Indian and Foreign research institutes and many big officers and celebrities have visited this model village.

Shri Umakant Umrao

Shri Umakant Umrao delivered his talk on "Beyond Rivers". Reflecting on his posting as Collector in Dewas region of Madhya Pradesh in 2006, he said that he saw people migrating from the region due to water scarcity. He informed that around 20 years back, for the first time in the country, water was delivered by train to Dewas. Groundwater level dropped from 100 ft to 800ft. Explaining the difference between various model of water conservation, he stressed on the efficiency of a profit-driven model, especially in today's materialistic world. He implied that India required a business model which can harness profits by rain water harvesting. He emphasized that India needs a model which is individual-centric, profitable and acceptable to Indian farmer. He said that the solution to this problem is increasing "pond" efficiency. A well-designed pond can ensure availability of 30 to 40 litres of water out of 100 litres of rainfall water for irrigation. A pond can be used to collect water from 1st order stream and pass the water to field. He added that we need to have a technical model for water conservation cum harvesting which is economically viable option for an individual to invest in. To make pond profitable, it should be located at the right place, should have the right depth and size. Shri Umrao informed that there are 15000 irrigation tanks in one Dewas district only. Water table has risen by 6 to 40ft in different locations. Milk production and crop production has also been increased due to this initiative.

Groundwater Irrigation Projects in Assam, AP and Gujarat

In an attempt to leverage the unutilized surplus groundwater resource to give impetus to irrigation, especially in the northeast region, the Ministry of Jal Shakti has approved three groundwater irrigation projects, two of which are in the northeast India – Assam and Arunachal Pradesh – while the third one is in Gujarat. The total cost of the three projects which are under Pradhan Mantri Krishi Sinchai Yojana (PMKSY) is Rs. 454.65 crore (Assam- Rs. 246.06 crore, Arunachal Pradesh- Rs. 45.3 crore and Gujarat- Rs. 163.29 crore). The aim of the projects is to provide easy access to irrigation water to farmers. This is the first time that such groundwater irrigation projects have been taken up by the Centre under PMKSY.

Assam and Arunachal Pradesh possess considerable potential for agricultural growth; however, the irrigation potential created is far less than what is required primarily because of non-utilization of abundant groundwater resource in the States. Similarly, in Gujarat, the groundwater resource is not being used up to its full potential.

Against the total groundwater availability of 24.26 BCM in Assam and 2.67 BCM in Arunachal Pradesh, only 2.73 BCM and 0.01 BCM is used respectively which clearly indicates the non-utilization of abundant groundwater resource in these northeastern States though all areas fall under Safe category. This can be attributed to factors like lack of funds in the States, lack of initiatives towards using groundwater resources, lack of access to electricity etc. Similarly, it can be observed that there are a number of blocks in Gujarat which fall under 'Safe' category and groundwater can be extracted for rain-fed areas for improving the irrigation potential.

In Gujarat, out of total 21.25 BCM groundwater availability, about 13.58 BCM is used. Out of total 248 assessment units 194 are safe, 25 are overexploited, 13 are saline, 11 are semi-critical and 5 fall under the critical category. Under the PMKSY- groundwater irrigation water abstraction structures are being planned only in those areas where extration is less then 60% water stage of groundwater. Keeping these factors in mind, the projects have been approved in the safe assessment units of all three states to ensure easy access of water to farmers in the States.

Keeping these factors in mind, the Ministry of Jal Shakti sought proposals for comprehensive groundwater irrigation projects in such States. The proposals for groundwater irrigation are required to be strictly formulated considering nature of aquifer system, spatial-temporal behavior of water level, groundwater resource availability, suitable artificial recharge structures, site for construction etc.

Assam, Arunachal Pradesh and Gujarat submitted proposals for taking up grounwater based irrigation in 14 districts in Assam (Barpeta, Bongaigaon, Darrang, Dhubri, Dibrugarh, Goalpara, Golaghat, Jorhat, Kamup(M), Kamrup, Kokrajhar, Nagaon, Sonitpur & Siv Sagar), 12 districts in Arunachal Pradesh (Lower Dibang Valley, Lohit, Namsai, Changlang, Longding, East Siang, West Siang, Lower Siang, Upper Subansiri, Lower Subansiri, Papum Pare & East Kameng) and one disrict in Gujarat (Ahwa Taluka of "Dang" district) respectively.

The details of the approved proposals are as under: -

	Assam	Arunachal Pradesh	Gujarat
Total command area of the project (hectares)	19116	1785	3768
Total farmers expected to be benefitted	19643	3350	3655
Total wells to be constructed	4779 (2344 solar-powered)	473 (all solar-powered)	2512 (628 solar-powered)

Jal Shakti Abhiyan

As part of the Jal Shakti Abhiyan, Shri Ashish Kumar, Director(Groundwater), Ministry of Jal Shakti, Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation visited Jangaon district (Bachannapet, Devaruppula & Lingala Ghanpur blocks) in Telangana from 27th August to 29th August 2019. The majority of the works are being carried out under MGNREGA:

Rooftop Rain water harvesting structure at MPDO Office

Borewell Recharge structure at Upper Primary School

Newly created farm pond at Mansanpally GP of Bachannapet

People Participation in the district

Renovated Tank Pochannapet GP of Bachannapet Block.

Three check dams have been constructed in the district. It could be observed that the water table in the surrounding area has increased due to this.

Best practices - Jangaon district

- Jangaon district has planted around 62 lakh saplings last year. They have already planted around 55 Lakh plants till the date of visit and the total target is around 81 lakhs during the year.
- Around 16000 Ha or 33% of the cultivable land (Horticulture and Agriculture plants) of the district has been put under Drip Irrigation.
- Three interventions that include all types of water conservation efforts viz drip irrigation; mulching and net-houses have been taken up at 11 places with size of each site as 2025 sqm.

Shri U.P. Singh, Secretary (DoWR, RD & GR) addressing the gathering at a workshop and review meeting of Jal Shakti Abhiyan held on 2nd August 2019 in New Delhi

As part of Jal Shakti Abhiyan, quiz and drawing competitions were organized on water conservation in a village school in Perambalur in Tamil Nadu. Smt. T. Rajeswari, Additional Secretary, Do WR, RD & GR, Ministry of Jal Shakti distributed awards to the winners.

जल शक्ति मंत्रालय

से जुड़ी खबरों की जानकारी के लिए

देखें:

जल शक्ति मंत्रालय का फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम पेज

mowrrdgr

MoJSDoWRRDGR

ministry_of_jal_shakti

“When we come together and work hard, then most difficult tasks can be accomplished successfully. Jan Jan Judega, Jal Bachega” (PM Modi #MannKiBaat)

PMKSY - लोअर पंजारा मध्यम सिंचाई परियोजना

श्री कुशविंदर वोहरा, आयुक्त, एसपीआर, जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार की लोअर पंजारा मध्यम सिंचाई परियोजना(पीएमकेएसवाई के तहत), महाराष्ट्र के लाभार्थी किसानों के साथ चर्चा

आयुक्त (एसपीआर), लोअर पंजारा परियोजना जो कि पीएमकेएसवाई (PMKSY) के तहत प्राथमिकता वाली परियोजनाओं में से एक है, की यात्रा के दौरान स्थानीय किसान श्री भगवान मोरे और उनके पुत्र आनंद मोरे के साथ चर्चा की जो इस परियोजना के लाभार्थियों में से एक हैं। उन्होंने परियोजना के निर्माण के कारण आए कृषि आय में वृद्धि और जीवन शैली में बदलाव के बारे में बताया। यहां बातचीत के कुछ अंश इस प्रकार है:-

आयुक्त (एसपीआर) प्रश्न: क्या यह सारा खेत आपका है? यह कितने एकड़ में है?

किसान उत्तर: हां यह सारा खेत हमारा ही है और यह 6 एकड़ का है।

प्रश्न: आप अपने खेत में किस फसल की खेती कर रहे है ?

उत्तर: हमने अपने खेत में प्याज की फसल की है ।

प्रश्न: इस कैनाल के होने से आपको क्या फायदा हुआ है?

उत्तर: खेती के लिए पानी कि मात्रा बढ़ गई है जिससे ज्यादा खेती हो रही है और ज्यादा फसल उगाई जा रही है।

प्रश्न: आपकी इस बावरी (open well) की गहराई कितनी है?

उत्तर: 40 फीट।

प्रश्न: आपकी इस 40 फीट की बावरी (open well) में अभी कितना पानी है?

उत्तर: तकरीबन 15 फीट के आसपास पानी है।

प्रश्न: जब यह केनाल नहीं था, तब कितना पानी रहता था?

उत्तर: 5 या 7 फीट ही पानी रहता था, इससे ज्यादा नहीं रहता था।

प्रश्न: अभी क्या पूरे साल इसमें इसी तरह 15 फीट तक पानी रहता है?

उत्तर: हां, 15 फीट तक पानी रहता है।

प्रश्न: अब आप लोगों को इससे क्या फायदा हुआ?

उत्तर: अब काफी ज्यादा फायदा है, पहले इतनी फसल नहीं होती थी, अब पानी ज्यादा होने के कारण फसल की पैदावार ज्यादा होती है।

प्रश्न: क्या अब आपकी सालाना कमाई में कुछ असर हुआ है?

उत्तर: हां, अब हमारी सालाना कमाई में काफी ज्यादा फायदा हुआ है। पहले हमारी सालाना कमाई 50 हज़ार से 1 लाख तक ही होती थी अब हमारी सालाना कमाई ४ लाख तक होती है।

प्रश्न: क्या बाजार में प्याज की किफायती कीमत मिल जाती है?

उत्तर: नहीं, पिछले 2-3 सालों की तुलना में प्याज की कीमत में कमी आई है।

प्रश्न: आप लोग यह प्याज की फसल बाजार तक कैसे भेजते है?

उत्तर: हम लोग अपनी गाड़ियों के माध्यम से बाजार तक पहुंचाते हैं।

प्रश्न: क्या वहां फसल के दाम प्रतिदिन ऊपर नीचे होते रहते हैं?

उत्तर: हां, रोज कीमत ऊपर नीचे होती रहती है और अभी बाजार में प्याज 600 रुपये प्रति क्विंटल तक बिक रहा है।

प्रश्न: इसका मतलब अब आपकी कमाई में पहले से ज्यादा फायदा हुआ है?

उत्तर: पहले प्याज की फसल में 50000 से 1 लाख रुपये तक की कमाई होती थी, परंतु अब यह कमाई बढ़कर 4 लाख रुपये तक हो गई है और पहले से अब अधिक फायदा हो रहा है।

प्रश्न: क्या अपको ऐसा लगता है कि सरकार अच्छा काम कर रही है जैसा कि हमारे प्रधानमंत्री जी ने किसानों की आय को दुगना करने की बात कही थी?

उत्तर: हां।

आयुक्त एसपीआर: जैसा कि हमने देखा है कि हम लोअर पंजारा परियोजना के कमांड क्षेत्र में हैं और हमने किसानों के साथ प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत परियोजना के लाभों के बारे में चर्चा की है। किसानों ने स्वीकार किया है कि नहर के निर्माण के बाद भूजलस्तर में वृद्धि हुई है और खुले कुओं में पूरे साल 15 फीट तक पानी मिल रहा है जो पहले केवल 6-7 फीट था, जिसके परिणामस्वरूप आय में वृद्धि हुई।

आयुक्त एसपीआर किसानो से बात करते हुए।

'मन की बात 2.0' की तीसरी कड़ी में प्रधानमंत्री का सम्बोधन

मन की बात 2.0 की तीसरी कड़ी में माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने जल संरक्षण और सदुपयोग को लेकर, जल शक्ति अभियान को जन आंदोलन बनाने का आह्वान किया। जनता ने इस अभियान को सशक्त किया और भारत के कोने-कोने से प्रत्येक नागरिक जल संरक्षण, वर्षा जल संचय के सन्देश में युद्धस्तर पर कार्य कर रहे हैं और सभी को जागरूक कर रहें है।

इसी क्रम में प्रधानमंत्री जी ने 'मन की बात 2.0' की तृतीय कड़ी में जनता से भारत को सिंगल यूज प्लास्टिक मुक्त बनाने का आह्वान किया है। आइये जानते हैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा 'मन की बात 2.0' की तृतीय कड़ी में की गई जनता से अपील के बारे में।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने मन की बात 2.0 की तीसरी कड़ी में कहा, "आपको याद होगा कि पिछले कुछ सालों में हम 2 अक्टूबर से पहले लगभग 2 सप्ताह तक देशभर में 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान चलाते हैं। इस बार ये 11 सितम्बर से शुरु होगा। इस दौरान हम अपने-अपने घरों से बाहर निकल कर श्रमदान के ज़रिये महात्मा गाँधी को कार्यांजलि देंगे। घर हो या गलियाँ, चौक-चौराहे हो या नालियाँ, स्कूल, कॉलेज से लेकर सभी सार्वजनिक स्थलों पर स्वच्छता का महा अभियान चलाना है। इस बार प्लास्टिक पर विशेष जोर देना है। 15 अगस्त को लाल किले से मैंने ये कहा कि जिस उत्साह व ऊर्जा के साथ सवा-सौ करोड़ देशवासियों ने स्वच्छता के लिए अभियान चलाया, खुले में शौच से मुक्ति के लिए कार्य किया, उसी प्रकार हमें साथ मिलकर Single use plastic के इस्तेमाल को खत्म करना है। इस मुहिम को लेकर समाज के सभी वर्गों में उत्साह है। मेरे कई व्यापारी भाइयों-बहनों ने दुकान में एक तख्ती लगा दी है, एक placard लगा दिया है, जिस पर यह लिखा है कि ग्राहक अपना थैला साथ ले करके ही आये। इससे पैसा भी बचेगा और पर्यावरण की रक्षा में वे अपना योगदान भी दे पायेंगे। इस बार 2 अक्टूबर को जब बापू की 150वीं जयंती मनायेंगे तो इस अवसर पर हम उन्हें न केवल खुले में शौच से मुक्त भारत समर्पित करेंगे बल्कि उस दिन पूरे देश में प्लास्टिक के खिलाफ एक नए जन-आंदोलन की नींव रखेंगे। मैं समाज के सभी वर्गों से, हर

गाँव, कस्बे में और शहर के निवासियों से अपील करता हूँ, करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि इस वर्ष गाँधी जयंती, एक प्रकार से हमारी इस भारत माता को प्लास्टिक कचरे से मुक्ति के रूप में हम मनाये। 2 अक्टूबर विशेष दिवस के रूप में मनायें। महात्मा गाँधी जयंती का दिन एक विशेष श्रमदान का उत्सव बन जाए। देश की सभी नगरपालिका, नगरनिगम, जिला-प्रशासन, ग्राम-पंचायत, सरकारी-गैरसरकारी सभी व्यवस्थाएँ, सभी संगठन, एक-एक नागरिक हर किसी से मेरा अनुरोध है कि प्लास्टिक कचरे के collection और storage के लिए उचित व्यवस्था हो। मैं corporate sector से भी अपील करता हूँ कि जब ये सारा plastic waste इकठ्ठा हो जाए तो इसके उचित निस्तारण हेतु आगे आयें, disposal की व्यवस्था हो। इसे recycle किया जा सकता है। इस से ईंधन बनाया जा सकता है। इस प्रकार इस दीवाली तक हम इस प्लास्टिक कचरे के सुरक्षित निपटारे का भी कार्य पूरा कर सकते हैं। बस संकल्प चाहिए। प्रेरणा के लिए इधर-उधर देखने की जरुरत नहीं है गाँधी जी से बड़ी प्रेरणा क्या हो सकती है।

Plastic से मुक्ति पाने के लिए हम सब, घर और घर के बाहर सब जगह से पूरी ताकत से लगेंगे और मुझे पता है ये सारे अभियान social media में तो धूम मचा देंगे। आइये, एक नए उमंग, नए संकल्प, नई शक्ति के साथ चल पड़ें।"

5th Meeting of India-Nepal Joint Commission

The fifth meeting of India-Nepal Joint Commission (JC) was held in Kathmandu on 21st August 2019. The meeting was co-chaired by Shri S Jaishankar, Minister for Foreign Affairs, Government of India and Shri Pradeep Gyawali, Minister for Foreign Affairs, Nepal. The JC reviewed the entire gamut of bilateral relations focusing on the areas of connectivity and economic cooperation, trade and transit, power and water resources, culture, education, etc. Shri J.Chandrashekhar Iyer, Commissioner (FM) represented Department of Water Resources, River Development & Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti. In the water resources sector, the JC deliberated on the bilateral Pancheshwar and Sapta Kosi projects, issues concerning Kosi and Gandak barrages and inundation issues along India-Nepal border.

Inter-Ministerial Meeting to consider continuation of India-Nepal Joint Project Office

An Inter-Ministerial Meeting to consider continuation of India-Nepal Joint Project Office (JPO-SKSKI), Biratnagar, Nepal for carrying out survey and investigation works and preparation of DPR of Sapta Kosi High Dam Multi-Purpose Project and Sun Kosi Storage-cum-Diversion Scheme in Nepal was held on 29th August 2019 under the chairmanship of Shri U.P. Singh, Secretary (DoWR, RD & GR), Ministry of Jal Shakti.

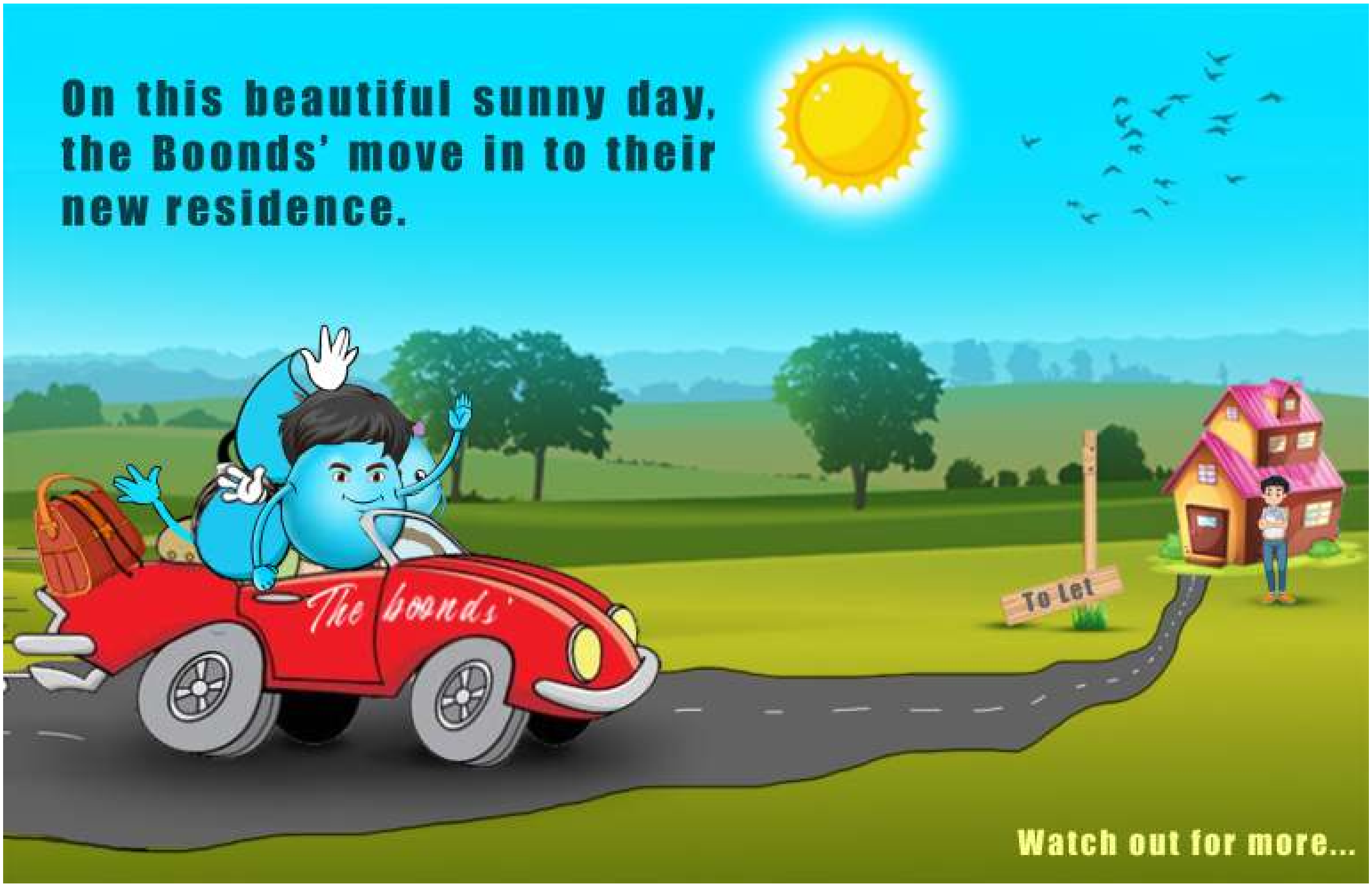

Can you match the dams with the rivers on which they are built?

DAM	RIVER
Tehri	Narmada
Bhakra Nangal	Koyna
Sardar Sarovar	Bhagirathi
Hirakund	Sutlej
Koyna	Kaveri
Mettur	Mahanedi

Hint: *Tehri Dam is built on the Bhagirathi River*

Answer:

Tehri - Bhagirathi, Bhakra - Sutlej, Sardar Sarover - Narmada, Hirakund - Mahanadi,
Koyna - Koyna, Mettur - Kaveri

save water

जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग
MINISTRY OF JAL SHAKTI
DEPARTMENT OF WATER RESOURCES,
RIVER DEVELOPMENT & GANGA REJUVENATION

Water Heroes - Share Your Stories

Contest

Win Rs.10,000*
Ten Prizes

FREE ENTRY

Be a Water Hero

Share your success stories in the field of water conservation

Starts on 1st September 2019

BUMPER PRIZES

- *TEN PRIZES OF RS- 10000/- EACH MONTH*
- *SHARE YOUR STORY IN MAX 300 WORDS*
- *SHARE YOUTUBE LINK OF YOUR VIDEO (1 TO 5 MINUTES)*
- *SHARE THE PICTURE OF YOUR WORK*

Send your entries: waterheroes.cgwb@gmail.com
For Application
Log in to www.mygov.in
For more details
Visit **www.mygov.in**
www.jalshakti-dowr.gov.in

*T & C Applied.

Namami Gange

World Water Week, Stockholm

Hon'ble Minister of Jal Shakti, Shri Gajendra Singh Shekhawat addressed a session on 29th August 2019 at the 'High Level Dialogue: Building a resilient future through water' during the World Water Week (25th to 30th August 2019) organized by the Stockholm International Water Institute in Stockholm, Sweden. Other eminent dignitaries who shared the stage with Shri Shekhawat included Mr. Torgny Holmgren, Executive Director , Stockholm World Water Week, Ms. Maggie, Senior Manager and Master of Ceremony, Stockholm International Water Week and H.E. Hernan Bascunan, Ambassador of Chile in Sweden.

During his address, Shri Shekhawat thanked His Majesty King Karl XVI Gustaf, for visiting the Namami Gange pavilion along with the Crown Princess and showing a keen interest in the initiatives undertaken by NMCG for the rejuvenation of the Ganga.

Shri Shekhawat added that water has been the driving force behind every great civilisation. The Prime Minister, Sh. Narendra Modi has now put India's water security at the centre of the Government's developmental agenda. The first concrete step taken in this direction by the Government has been the constitution of the new integrated Ministry to deal with all the aspects of water – the Ministry of Jal Shakti.

During his speech, Shri Shekhawat acclaimed the Namami Gange Mission as one of the most ambitious river rejuvenation schemes in the world and that it has been taken up by the Government in a mission mode aimed towards the rejuvenation of river Ganga and its tributaries, following a complete river basin approach. The Namami Gange Pavilion remained the center of attraction for all the visiting delegates and experts.

Water Impact Initiative & Ambassadors' Dialogue with Minister of Jal Shakti

A Water Impact Initiative and Ambassadors' Dialogue with Minister of Jal Shakti was held at New Delhi on 22nd August 2019. The Hon'ble Minister, Jal Shakti, Shri Gajendra Singh Shekhawat, Shri U.P. Singh Secretary, Department of Water Resources, River Development, and Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti, Shri Parameswaran Iyer, Secretary, Department of Drinking Water &Sanitation, Ministry of Jal Shakti, Shri Rajiv Ranjan Mishra, Director General, National Mission for Clean Ganga, Dr. Vinod Tare, Head, cGanga and the Ambassadors and Diplomats of countries such as Australia, Germany, Spain, Slovenia, Gambia, Argentina, Netherlands, Belgium USA, Denmark, Brazil, South Korea, Canada, Israel, European Union-Delegation, Norway, Finland, UK, France, Italy, Sweden, Austria,New Zealand were present on the occasion.

While addressing the Ambassadors/Diplomats of the many countries present, Shri Shekhawat said, "The Government of India has launched the Jal Jeevan Mission which aims to invest nearly Rs. 3.5 lakh crore over the next few years to bring access to drinking water to all households by the year 2024." "Our PM has said that our efforts have to quadruple in all forms from those that have been made in the last 70 years. That is because water has remained an under-invested category in our country resulting in many challenges, to solve which requires a long journey but we are not afraid of that and have started to move with rapid pace towards the goal of providing water to all."

Shri Shekhawat said this initiative will provide a platform for global partnerships. The country will need access to technology, knowledge and capital to deliver on its stated goals. We have been working strategically with a number of countries such as Israel, Canada, Japan, Germany, US, UK, Denmark, EU Member Nations, he said.

The Great Ganga Run

National Mission for Clean Ganga (NMCG) organized a half marathon 'The Great Ganga Run'in New Delhi on 15th September 2019. This was in line with NMCG's endavours towards educating and engaging people, especially youth in the rejuvenation and cleaning of River Ganga. The Ganga Run was flagged off by Shri Gajendra Singh Shekhawat, Union Minister for Jal Shakti and Shri Kiren Rijiju, Union Minister for Youth Affairs and Sports at the Jawaharlal Nehru Stadium.

Leading from the front, Sh. Shekhawat took part in the 5 km segment of the event and was a constant source of inspiration for everyone present. On the occasion, Sh. Shekhawat said, "It is extremely pleasing and reassuring to see that so many people are concerned about water conservation. Today is a very big step towards ensuring a water secure future for the coming generations. The resolve with which we are running today, perhaps our future generations might not have to run after water."

Over 20,000 enthusiastic water warriors, students, officials and seasoned marathon runners from all walks of life took part in the half marathon, which had four different categories (2km, 5km, 10km and 21km) to accommodate people from all age groups.

6th India Water Week 2019

The sixth edition of India Water Week-2019 with the theme "Water Cooperation- Coping with 21st Century Challenges" was held during 24th to 28th September 2019 at New Delhi.

The multi disciplinary conference was inaugurated by Shri Ram Nath Kovind, Hon'ble President of India in the august presence of Shri Gajendra Singh Shekhawat Hon'ble Minister of Jal Shakti and Shri Rattan Lal Kataria, Hon'ble Minister of State for Jal Shakti on 24th September 2019 at Vigyan Bhawan. Hon'ble President of India while inaugurating the event mentioned that water issues are too multi-faceted and complex to be solved by the Government or a nation alone. All nations must come together to build a water sustainable future. Accordingly, this year's theme of IWW-2019 viz "Water Cooperation – Coping with 21st Century Challenges" covered these aspects in detail during the deliberations. The inaugural session was followed by a plenary session which comprised addresses by eminent experts in the field of water resources sector. Shri U. P. Singh, Secretary, Do WR, RD & GR initiated the session by outlining the water sector scenario of our country and highlighted the challenges being faced. Shri Parameswaran Iyer, Secretary, Department of Drinking Water and Sanitation presented the objectives of Jal Shakti Abhiyan & Jal Jeevan Mission.

The exhibition which ran parallely with the event was inaugurated by Shri Gajendra Singh Shekhawat on 25th September at the Indira Gandhi National Centre for Arts (IGNCA).

Japan and European Union associated themselves as international partners and delegation led by Mr. Kenji Hiramatsu, Ambassador of Japan and Mr. Walter Lindner, Ambassador of Germany actively participated in the event. Among others, the event was supported by Ministry of Agriculture and Farmers Welfare, Ministry of Power, Ministry of Urban Development, Ministry of Rural Development, Ministry of Environment, Forest and Climate Change and NITI Aayog. Andhra Pradesh, Bihar, Chhattisgarh, Maharashtra, Madhya Pradesh, Kerala, Karnataka, Gujarat, Rajasthan and Goa participated as partner States.

The five-day multi disciplinary conference comprised of 15 seminars, 12 panel discussions, 4 brainstorming sessions and 6 special sessions. About 170 technical papers were presented during these sessions in which eminent experts in the field of Water Resources Development & Management shared their experiences.

The event received overwhelming response from the water resources community across the globe through about 1500 participants including 75 international participants and 166 technical papers. The valedictory address was delivered by Shri. Gajendra Singh Shekhawat, on 28th September 2019 at Vigyan Bhawan.

NEWS IN BRIEF

Initiation of a 5-year project on "Innovation Centre for Eco-Prudent Wastewater Solutions"

A 2-day workshop on "Inception cum Need Assessment" under the DST sponsored project entitled "Innovation Centre for Eco-Prudent Wastewater Solutions (IC-EcoWS)" was organized by National Institute of Hydrology, Roorkee during 8th & 9th August 2019, at NIH Roorkee. The workshop was organized to understand the needs and expectations from different stakeholders on developing cost-effective NTS-based solutions for wastewater treatment and their application for rejuvenation of water bodies.

Training on "Water Budgeting Tool for River Basins Using Google Earth Engine Applications"

With the support of World Bank and International Water Management Institute (IWMI), Sri Lanka, a training course on "Water Budgeting Tool for River Basins using Google Earth Engine Applications" was organized at National Institute of Hydrology, Roorkee during 19th to 23rd August 2019 under the National Hydrology Project. This Training of Trainers (ToT) course is the follow up of the basic Google Earth Engine (GEE) course held in National Water Academy in November 2018. The aim of the course is to provide the participants with the necessary skills and knowledge on Google Earth Engine applications in water resources so that the trainers can deliver effective classroom training on this subject.

Students and teachers of Eischer School visited Rooftop Rain Water Harvesting & Recharge Structures at Bhujal Bhawan, Faridabad on 9th August 2019.

Public Interaction Program under National Project on Aquifer Management (NAQUIM) to discuss issues of local ground water and management by CGWB at Kalna-I block, Purba Barddhaman district was held at West Bengal on 20th August 2019.

Presentation by Prof. Muddu Sekhar, IISc, Bangalore on "Development of Groundwater Flow Model and Preparation of Aquifer Management Plan" in parts of Karnataka State was held at CGWB, Jamnagar House, New Delhi

NEWS IN BRIEF

Hon. Union Minister Shri Gajendra Singh Shekhawat addressing the gathering at National Water Academy, Pune during the inauguration ceremony of 31st ITP on 20th August 2019. Shri U.P. Singh, Secretary, Do WR, RD & GR was also present on the occasion.

Mass awareness programme on water conservation at a government senior secondary school in Sehnewal village in Ludhiana, Punjab.

Shri U.P. Singh, Secretary, Do WR, RD & GR, Ministry of Jal Shakti addressed the young students at Daulat Ram college, Delhi University on 30th August 2019 during a 'National Workshop on Water and Waste Management' in New Delhi. He urged all to become 'Jal Doots' during his speech.

Central Water Commission on behalf of Ministry of Jal Shakti, Do WR, RD & GR participated in the 23rd National Exhibition organized by Central Calcutta Science & Cultural Organization for Youth in Kolkata during 28th to 31st Aug 2019. On the first day, students/teachers from various schools and others visited the stall and enquired about the display charts.

National Hydrology Project (NHP) given Esri India "Special Achievement in GIS (SAG)" Award for exemplary work done in the development of a WebGIS-based Water Information System under NHP program on 28th August 2019.

NEWS IN BRIEF

Installation of Solar Plant at CWPRS, Pune

To promote ecological and sustainable growth as per the Ministry of New and Renewable Energy (MNRE) directives, CWPRS took the initiative to install a rooftop Solar Power Plant (700 KWp) in CWPRS campus to meet the power demand. The Solar Power Plant was inaugurated by Shri Gajendra Singh Shekhawat, Hon'ble Union Minister of Jal Shakti, in the presence of Shri U.P.Singh, Secretary (Do WR, RD & GR), Ministry of Jal Shakti and Dr. V V Bhosekar, Director CWPRS on 20th August 2019. After the inauguration of solar plant, Hon'ble Union Minister visited various physical hydraulic models such as Mopla Bay Fishing Harbour, Polavaram Model, Yamuna Model. Hon. Minister and Secretary also planted a tree at CWPRS campus.

DOHI Building Roof Top

DOHI Building Roof Top

Multipurpose Wave Basin Hanger Roof Top

Development of Navi Mumbai International Airport (NMIA)

A new greenfield airport known as Navi Mumbai International Airport (NMIA) is being developed by City and Industrial Development Corporation of Maharashtra Limited (CIDCO) in Panvel creek at Kopre-Panvel area of Navi Mumbai. One of the major components of this project was recoursing of Ulwe River for the purpose of reclamation of land for the Airport which has been successfully completed as per the recommendations given by CWPRS. CIDCO has also expressed its appreciation.

Visit of CWPRS officers to Indira Sagar Dam Project, Madhya Pradesh

A team of officers from CWPRS visited Indira Sagar Dam project and had a brief discussion with the NHDC officers over the gate operation schedule of the spillway with newly constructed energy dissipation arrangement (EDA) in the form of a ski-jump bucket of the main spillway. The officers witnessed the performance of newly constructed EDA of main spillway and combined operation of main and auxiliary spillways.

NEWS IN BRIEF

व्यास जलविद्युत परियोजना, डाकपत्थर, उत्तराखंड

केंद्रीय मृदा और सामग्री अनुसंधान स्टेशन (CSMRS) की टीम ने 21 से 23 अगस्त 2019 तक व्यास जलविद्युत परियोजना स्थल का दौरा किया। परियोजना के निर्माण के लिए उपयोग की जा रही निर्माण सामग्री के नमूने एकत्र किए गए और साइट प्रयोगशालाओं में परीक्षण किए गए और विस्तृत विश्लेषण के लिए केंद्र स्थल में लाया गया। साथ ही, परियोजना अधिकारियों को बेहतर गुणवत्ता नियंत्रण के लिए नवीनतम निर्माण प्रथाओं का पालन करने की सलाह दी गई।

जल शक्ति अभियान

जल शक्ति अभियान के तहत, केंद्रीय मृदा और सामग्री अनुसंधान स्टेशन के लगभग 40 वैज्ञानिकों ने जल संरक्षण और वर्षा जल संचयन के लिए लागू किए जा रहे पांच अलग-अलग प्रणाली के तहत विभिन्न गतिविधियों के अध्ययन के लिए, तकनीकी अधिकारियों के रूप में पंजाब, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के जिलों के विभिन्न ब्लॉकों का दौरा किया।

तलहन गाँव, जालंधर (पंजाब) में अपशिष्ट स्थिरीकरण तालाब का निर्माण किया गया।

राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय जंडियाला गुरु, अमृतसर (पंजाब) में वृक्षारोपण किया गया।

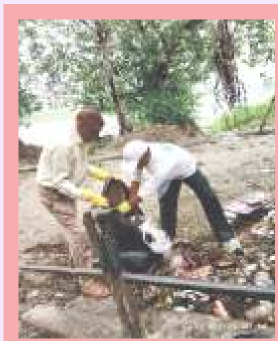

केंद्रीय मृदा और सामग्री अनुसंधान स्टेशन में प्रशिक्षण

केंद्रीय मृदा और सामग्री अनुसंधान स्टेशन द्वारा 22 और 23 अगस्त 2019 को "नदी घाटी परियोजनाओं के लिए ठोस निर्माण सामग्री और इसके महत्व" पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। केंद्रीय जल आयोग, वाप्कोस, उत्तर प्रदेश सिंचाई और एस जे वी एन एल लिमिटेड के प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण सत्र में भाग लिया।

स्वछता ही सेवा अभियान

स्वछता ही सेवा अभियान के एक भाग के रूप में, केंद्रीय मृदा और सामग्री अनुसंधान स्टेशन के अधिकारियों ने गीता कॉलोनी, गांधी नगर, नई दिल्ली के पास यमुना नदी के घाट एवं तटीय स्थलों की सफाई की।

"There is no fixed way to conserve water. In different parts, different methods may be adopted but the aim is the same – to conserve every drop of water."

(PM Modi)

NEWS IN BRIEF

- The 6th Special General, 33rd Annual General Meetings of NWDA Society and 16th meeting of Special Committee for Interlinking of Rivers (SCILR) were held on 21st August 2019 under the chairmanship of Shri Gajendra Singh Shekhawat, Hon'ble Minister(Jal Shakti) in Vigyan Bhawan Annexe, New Delhi. The Hon'ble Minister of State for Jal Shakti, Hon'ble Ministers for Water Resources of Govts. of Bihar, Puducherry and Jharkhand and other senior officers of various Central/State Governments attended the meetings.

- Wildlife Institute of India, submitted its Interim Report of "Development of Landscape Management Plan and Monitoring with reference to Ken-Betwa River Link Project in Panna Tiger Reserve, Madhya Pradesh" to PCCF(WL) of Uttar Pradesh and Madhya Pradesh in July 2019.

- Director General, NWDA held discussions with Principal Secretary, WR & Irrigation Department, Govt of Uttar Pradesh regarding water sharing of the Ken-Betwa link project on 30th August 2019.

एनएमसीजी ने उत्तर प्रदेश के सबसे बड़े वृक्षारोपण में बढ़-चढ़कर लिया हिस्सा

भारत छोड़ो आंदोलन की 77वीं वर्षगांठ के अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार ने 22 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य रखा है। यूपी सरकार ने इस मुहिम के तहत राज्य के कासगंज जिले के चंदनपुर घटियारी गांव के गंगावन में 62 हेक्टेयर जमीन पर 9 अगस्त 2019 को एक लाख एक हजार पौधे लगाएं। एक दिन में एक जगह पर ये सबसे बड़ा वृक्षारोपण है, जिसमें राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। एनएमसीजी गंगा की अविरलता के साथ ही ताल-तालाबों को भी संरक्षित कर रहा है, जिसकी वजह से ये पौधारोपण बहुत जरूरी है। कासगंज का गंगावन गंगा से मात्र ढाई किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

इस वृक्षारोपण की एक विशेषता ये भी है कि यहां साइंटिफिक तरीके से 11 उपवन और वाटिकाओं में 51 प्रजातियों के पौधे लगाए गए हैं। इनमें 15 फलदार जैसे- जामुन, आंवला, नाशपाती, बेर, आम, 11 औषधीय जैसे- आंवला, अशोक, बेल, नीम, पुत्रजींवा, 9 अध्यात्मिक व पौराणिक जैसे- चंदन, रुद्राक्ष, पीपल, बरगद, कदम्ब, 9 शोभाकार जैसे- कचनार, गोल्ड मोहर, मौल श्री, चंपा, अमलतास, 5 पर्यावरणीय और 5 इमारती प्रजाति शामिल हैं। इस मौके पर उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के महानिदेशक श्री राजीव रंजन मिश्रा, उत्तर प्रदेश एनएमसीजी के अधिकारी, गंगा प्रहरी और अलग-अलग स्कूल से आए छात्र-छात्राऐं मौजूद थे।

Raman Kant

Feedback

जल चर्चा पत्रिका बहुत अच्छा प्रयास है मंत्रालय का लेकिन इसको और अधिक प्रभावी व ज्ञानवर्धक बनाया जा सकता है। मैं अपने अनुभवों के आधार पर कुछ सुझाव प्रस्तावित कर रहा हूं, आशा है कि ये पत्रिका के लिए उपयोगी होंगे।

- पत्रिका में अखबारों की कटिंग इसकी गंभीरता को कम कर रही हैं। रखना भी है तो सीमित और बस उनके हेडिंग ही हों क्योंकि पत्रिका में छपी विस्तृत खबर को न तो कोई पढ़ पाता है और न ही पढ़ता है।
- पत्रिका के फोटो की गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता है।
- फोटो कम हों लेकिन बड़े साइज में होंगे तो प्रभावी होंगे।
- जल व नदियों संबंधी डाटा भी पत्रिका के प्रत्येक अंक में अलग-अलग ढंग से प्रकाशित किया जाएगा तो शोध छात्रों व सामाजिक कार्यकर्ताओं को इसका लाभ होगा।
- पत्रिका में जल संरक्षण (तालाब व वर्षाजल संरक्षण आदि) व नदी सुधार के लिए प्रमाणिक मॉडल तथा इनोवेशन को भी स्थान देने से जमीनी स्तर पर कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं को इसका लाभ होगा।

मेरा नदियों का सफर

मैंने अपनी युवा अवस्था में ही तय कर लिया था कि अपना जीवन समाज के लिए समर्पित करना है। समाज में सुधार करने के लिए बहुत कुछ था और आज भी है। ग्रामीण पृष्ठभूमि के नाते मैंने तालाब और नदियों के लिए कार्य करने का दृढ निश्चय किया। मैं दो नदियों-गंगा की प्रमुख सहायक नदी काली पूर्वी व यमुना की सहायक नदी हिण्डन- के लिए कार्य कर रहा हूं। नदियों व तालाबो के संरक्षण का सफर वर्ष 2001 में प्रारम्भ हुआ और इस सफर को पूरा करने के लिए 2004 में नीर फउंडेशन की नींव रखी। जोकि 18 वर्ष बीत जाने के पश्चात् आज भी अनवरत जारी है। मेरा लक्ष्य इन दोनों नदियों को निर्मल व अविरल बनाने में अपना अधिकाधिक योगदान देना है।

हिण्डन नदी के लिए प्रयास

हिण्डन नदी पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गंगा-यमुना के दोआब की प्रमुख नदी है। यह सहारनपुर जनपद में शिवालिक की पहाड़ियों से निकलकर मुजफ्फरनगर, शामली, मेरठ, बागपत, गाजियाबाद से होते हुए अंत में गौतमबुद्धनगर जनपद में जाकर यमुना नदी में समाहित हो जाती है। अपनी यात्रा में हिण्डन सात जनपदों में कुल 355 किलोमीटर की दूरी तय करती है। इसकी दो सहायक नदियाँ काली पश्चिमी व कृष्णी हैं। ये दोनों नदियाँ भी सहारनपुर से ही निकली हैं। काली पश्चिमी हिण्डन नदी की पूर्वी दिशा में बहती है जो कि करीब 145 किलोमीटर का सफर तय करके मेरठ जनपद के पिठलोकर गांव के निकट हिण्डन में समाती है जबकि कृष्णी जो कि हिण्डन नदी से पश्चिमी दिशा में बहती है, करीब 153 किलोमीटर का सफर तय करके हिण्डन में समाहित होती है। हिण्डन नदी के उद्गम पर भी नागदेइ, धमोला व पांवधोई जैसी छोटी नदियाँ हैं जो हिण्डन में ही विलीन होती हैं। हिण्डन नदी के मुख्य उद्गम शिवालिक के पहाड़ों में हाण्डाकुण्डी, पीरवाली, सपोलिया, दुजाला व स्रोती जैसी छोटी धाराएं हैं जोकि नदी में मुख्य पानी का स्रोत हैं।

हिण्डन नदी के सुधार के लिए वर्ष 2006 में जब कार्य प्रारम्भ किया तब कोई संसाधन ही नहीं थे। हिण्डन के संबंध में कोई विस्तारपूर्वक जानकारी नहीं थी। नदी का कोई नक्शा तक नहीं था। तीन बार हिण्डन नदी की यात्रा की और एक नक्शा हिण्डन व उसकी सहायक नदियों का बनाया जिसको आज सभी सरकारी व गैर-सरकारी कार्यों में प्रयोग में लाया जाता है। हिण्डन नदी का पहला तकनीकी अध्ययन भी किया।

हिण्डन सेवा

हिण्डन नदी की सफाई का कार्य 2018 में प्रारम्भ किया जो कि अनवरत जारी है। मेरठ व बागपत की सीमा पर समाज व प्रशासन को साथ जोड़कर हिण्डन नदी की सफाई का कार्य प्रारम्भ किया। इस कार्य में रोजाना 200 से 250 लोग जुटते थे जिसमें सामाजिक कार्यकर्ता, किसान, छात्र व अलग-अलग संगठनों के स्वयं सेवक थे। मेरे नेतृत्व में यह कार्य 50 दिन चला और करीब15 किलोमीटर नदी साफ कर दी।

नदी उद्गम की खोज

हिण्डन नदी का उदगम सहारनपुर जनपद के पुर का टांका गांव को माना जाता रहा है। मैंने अपनी टीम के साथ सेटेलाइट मैपिंग व ब्रिटिश गजेटियर के अनुसार तैयारी की और हिण्डन नदी के वास्तविक उद्गम शिवालिक की पहाड़ियों में बरसनी फॉल तक पहुंचे। इस शोध को जिला प्रशासन से लेकर उत्तर प्रदेश सरकार व एन0एम0सी0जी0 तक पहुंचाया। अब हिण्डन नदी के सुधार के कार्य बरसनी फॉल को आधार मानकर किए जा रहे हैं।

काली नदी पूर्वी के लिए प्रयास

गंगा की प्रमुख सहायक नदी काली पूर्वी जो कि मुजफ्फरनगर जनपद के अंतवाड़ा गांव से प्रारम्भ होकर मेरठ, हापुड़, बुलंदशहर, अलीगढ़, कासगंज, एटा, फर्रुखाबाद से होते हुए करीब 498 किलोमीटर का सफर तय करके अंत में कन्नौज में जाकर गंगा में समाहित हो जाती है।

तकनीकी अध्ययन

काली नदी पूर्वी का वर्ल्ड वाइड फंड(WWF) के सहयोग से पहला तकनीकी अध्ययन 2015 में किया। इस अध्ययन को तत्कालीन जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण मंत्री सुश्री उमा भारती को सौंपा जिसके बाद इस नदी को नमामि गंगे योजना में शामिल कर लिया गया। इसके आधार पर नदी किनारे के आठ गांवों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के सफल प्रयास किए गए। नदी किनारे के बीस गांवों का स्वास्थ्य सर्वेक्षण पूर्ण किया गया।

नदी सफाई का कार्य

विगत 2 अक्टूबर, 2018 को मेरठ से नदी सफाई का कार्य प्रारम्भ किया। इसमें हजारों छात्रों, किसानों, जनप्रतिनिधियों व सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इस कार्य का एन0डी0टी0वी0 पर सजीव प्रसारण किया गया। नदी सफाई का कार्य आज भी विभिन्न स्थानों पर चलता रहता है।

नदी संसद

काली नदी पूर्वी के किनारे बसे गांवों में हम नदी समितियों का गठन कर रहे हैं। इन प्रतिनिधियों के माध्यम से नदी संसद बनाई जाएगी जो कि नदी से जुड़े निर्णय स्वयं लेगी। करीब दो दर्जन से भी अधिक गांवों में नदी समितियों का गठन किया जा चुका है। नदी संसद का उद्देश्य नदी किनारे बसे समाज को अपनी नदी से जोड़ने का है जिसमें हमें सफलता भी मिल रही है।

नदी उद्गम का पुनर्जीवन

काली नदी पूर्वी के उद्गम को पुनर्जीवित करने का कार्य तेजी से किया जा रहा है। मुजफ्फरनगर जिला प्रशासन से नदी की जमीन का चिन्हांकन कराकर वहाँ झील निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया जा चुका है, साथ ही वहां रिचार्ज पिट भी बनाए जा रहे हैं। इसमें सिंचाई विभाग, जिला प्रशासन व नमामि गंगे का भी सहयोग हमें मिल रहा है। हमारा लक्ष्य इस नदी को नवम्बर 2019 तक पांच किलोमीटर तक स्वच्छ बहाने का है। झील निर्माण के पश्चात् यहां पर नदी उत्सव का भी आयोजन किया जाएगा।

नदी पुत्र रमन कान्त

IN NEWSPAPER

10 IDEA EXCHANGE
NEWSMAKERS IN THE NEWSROOM

"The biggest problem in cleaning Ganga was capacity building... It took Germany 25 years... to clean up the Rhine..."

'Water a challenge for decades... Work should have begun 20 yrs ago. We're late, but not too late'

Jal Shakti Minister Gajendra Singh Shekhawat lays our government plan on revival, reuse of water through traditional water bodies, rainwater harvesting and treatment of sewage water, and calls for more interest from states and behavioural change among public

"We can make drinking water a revenue source, but if we also do it with treated sewage water, all will be okay... 70% of Singapore drinks treated sewage water... (it) then happens in India?"

Two villages pool hill water, bid goodbye to dry days

J'khand Hamlets Earn Praise In 'Mann Ki Baat'

ASRP.Mukesh
@timesgroup.com

STREAM OF CONSCIOUSNESS: Villagers construct a minor check-dam using loose boulders to retain rainwater

Ranchi: Aara and Keram, twin villages on Ranchi's outskirts, shot to fame recently when Prime Minister Narendra Modi chose them for praise during his monthly 'Mann Ki Baat' programme. The villages, Modi said, had channeled and conserved rainwater flowing down from a nearby hill, using it for drinking and irrigation purposes.

Local residents said they were inspired after a visit in 2016 to Ralegaon Siddhi, the native village of social activist Anna Hazare in Maharashtra. Today, Aara and Keram have enough water even when monsoon plays truant.

Ramesh Bediya, head of the village forest conservation committee, said in three months since February this year, they managed to create around 600 check-dams to channel water running down from Dumba Pahar.

He said, "We first approached the government (MNREGA department) to approve the project. They hailed our plan but asked us to wait as the model code of conduct was in place due to the Lok Sabha polls. However, rather than wasting time, we began building minor check dams by using loose boulders available in plenty in the hills and forests here. Altogether 150 people worked on this in turns daily." The move has also helped them grow crops round the year.

Suraj Karmali, a resident of Aara village, said, "Earlier, I only used to do farming during the kharif season. But last year I took up vegetable farming too as there is enough water."

In many ways, Aara and Keram are idyllic as well as ideal villages. What's helped them, the villagers said, was their faithful devotion to the "six principles for development" — shramdaan (mass movement), nasha-bandi (no alcohol), nas-bandi (family planning), charai-bandi (no uncontrolled grazing), kulhad-bandi (no felling of trees) and lota-bandi (no open defecation). The two clusters are "alcohol and tobacco free", as some posters loudly proclaim.

One cannot miss notice boards put up prominently at various places that announce adherence to the six principles. Every resident has to live by these rules, failing which the gram sabha imposes a fine of Rs 1,... at the first offence, with subsequent violations leading to severance from government schemes.

MAKE IN INDIA WATER POSITIVE A TIMES OF INDIA INITIATIVE

जलसंचयन को लेकर दिल्ली से आई जलशक्ति टीम ने बठिंडा के तीन ब्लाकों में किया दौरा

भास्कर न्यूज | बठिंडा

दौरा करने पहुंची टीम।

बठिंडा जिले में जल संचयन को लेकर केंद्र द्वारा नियुक्त जलशक्ति टीम ने 12 जुलाई के दौरे के दौरान जारी निर्देशों के बाद काम की प्रोग्रेस जानने को बुधवार को मौड़, रामपुरा तथा बठिंडा ब्लाक के 20 गांवों का दौरा किया। टीम के नोडल अधिकारी ज्वाइंट सेक्रेटरी डॉ. आरके महाजन, डायरेक्टर नीति आयोग दीपिका लोहिया तथा सेंट्रल स्वायल एंड मैटीरियल रिसर्च स्टेशन (सीएसएमआरएस) के साइंटिस्ट डॉ. आरपी पाठक ने तीन ब्लाकों के गांवों में दौरा कर बारिश के पानी का संचयन, वाटर बॉडी को पुनर्जीवित करना, वाटर शेड मैनेजमेंट, पौधारोपण तथा रेनवाटर हार्वेस्टिंग के कामों को देखा। सोमवार को टीम प्रोग्रेस रिपोर्ट नई दिल्ली में कैबिनेट सेक्रेटरी को सौंपेगी। 1 जुलाई को केंद्र सरकार द्वारा शुरू किए गए जल शक्ति अभियान के तहत पहुंची टीम ने बुधवार को पानी की संभाल को ब्लाक स्तर पर चलाई जा रही योजनाओं का अवलोकन किया। टीम ने गांव हरनाम सिंह वाला, संधू खुर्द, दयाली खुर्द, हरनाम सिंह वाला, मंडी कलां, बल्लुआना, करमगढ़ सतरां, कोठभारा, भाई बख्तौर, राम नगर, मौड़ खुर्द, घुम्मन कलां, सुखा सिंह वाला, जोधपुर रोमाणा, झुंबा व दियौण का दौरा किया। टीम अब सितंबर में एक बार बठिंडा का दौरा कर योजनाओं को जमीन पर लागू करवाने के काम पर रिपोर्ट करेगी। टीम ने इस दौरे में गांवों में जल संचयन को लेकर हो रहे कामों को काफी नजदीक से देखा है तथा निर्देश अनुसार ठीक पाया है। टीम अनुसार काम पूरा नजर आने में करीब 5 से 6 माह का वक्त लगेगा, जोकि पूरे एरिया को प्रभावित करेगा। मौके पर एसडीएम अमरिंदर सिंह टिवाणा व अन्य अधिकारी भी थे।

Diamond baron from Surat leaves sparkling water legacy

Himanshu Bhatt & Melvyn Reggie Thomas | TNN

Diamond baron Dholakia said that more than 2,500 people have participated in the construction of 45 lakes

Surat: They say diamonds are a woman's best friend, but it wasn't a shining stone that Savji Dholakia's mother wanted. All she ever prayed for was a little rain.

Many years ago, in diamond baron Dholakia's native Dudhala in Amreli district (Gujarat), children's education would take a back seat as villages reeled from long dry spells, rain-fed agriculture their sole mainstay. Erratic rains led to crop failure and hardship. Young Savji, too, was forced to quit his studies and move to Surat for a livelihood where he went on to script a glittering rags-to-riches story.

The 57-year-old owner of a Rs 6,000-crore diamond empire never forgot his mother's prayers or his childhood plagued by perennial water crisis, a problem that persists in Amreli.

The promoter of Hari Krishna Diamonds hit headlines in 2015 when news spread that he had gifted cars and flats to his employees, but his Dholakia Foundation over the last two years has worked on a more lasting legacy. It has helped build or deepen 45 lakes in his birthplace Dudhala and 22 more water-scarce villages of Amreli.

Dholakia says his target is to build 70 lakes. "It is time to repay my native place," the diamond baron said, adding, "25 lakes will be constructed in the next year."

Talking about turning drought-ridden villages water resilient, Dholakia said, "I had donated Rs 33 lakh to a private trust for rainwater harvesting in Saurashtra 15 years ago. But then I felt it would be better to make a lake in a village to meet the needs of people and farmers. So I took on the task of building five small lakes in Dudhala, spending Rs 1.5 crore."

Work on a 400-acre sprawl in Dudhala was started by digging 15-20 feet deep into the dry bed of a creek called Gagario, a couple of kilometres from the Shetrunji river, the second major river in Saurashtra, which flows into the Arabian Sea. Water from Shetrunji was then diverted into Gagario, filling up the 400 acres, which has become a source of water to nearly 25 villages in areas surrounding Dudhala.

Dholakia Foundation goes village to village, encouraging local residents to partner in "lake development work". The foundation pays Rs 25 lakh to each panchayat for machinery, expertise and wages. Villages decide whether they want one large water body or a couple of smaller reservoirs.

"More than 2,500 people have participated in construction of the 45 lakes in our villages," said Dholakia. For the makers of lakes, it is heartening to see "small lakes of an acre or two fill up early monsoon, the water lasting several months".

"This has ended villagers' long trudge to get daily water," said Bharat Der of Lathi village. "It has also helped farmers take two crops a year. Dependence on monsoon has far reduced."

Trupti Sonara, a government geologist, said, "Storage of water in lakes helped recharge groundwater in these villages. While digging the lakes, they took care to remove soil from the upper layer, which is impervious. As a result, underground seepage of water is very good."

Nandlal Nakrani, a farmer from Ganeshgadh village, said, "You dig up anywhere and you will find water at 30 feet, thanks to the huge lake constructed in our village two years ago." It is the lasting treasure the villages need.

Somerville School

With the depleting levels of groundwater every year and the wastage of clean water, soon water will be in great shortage. Foreseeing this, education of water conservation is an essential subject that every school should incorporate in one or the other way. Somerville school of Greater Noida is one such school that helps students become aware of their duties towards the conservation of the environment.

Beyond curriculum, the school carries various environmental activities to help the students become eco-friendly and understand their responsibility towards water. Recently, on the initiative of the district administration, the school conducted a week-long campaign on water conservation in which a host of activities were performed to sensitize students such as roleplay, mime, street play, and a PowerPoint presentation.

Roleplay on "Water: the Big Deal!"

In this play, the children highlighted the water crisis in slum areas where people stand in a queue for hours to get a bucket of water. The play brought in limelight the water woes in the country making all realize that each drop counts and must not be wasted.

A mime on "Water Conservation"

The middle school students presented a mime on water conservation topic. It emphasized the importance of water and the need to save it.

A street play on "Bachao Bachao, Paani Bachao"

The play showed how the water crisis could affect everybody's life soon. An inter-school mime competition was also organized on the premises to spread the message beyond the school.

PowerPoint presentation

The powerpoint presentation with animation, visuals and videos prepared by class 12 students provided statistical data from NITI Aayog to the audience. It detected 21 major cities of India are expected to run out of groundwater by 2020. The presentation also introduced traditional water conservation structures like Kuhls and Baolis, gave insight into rainwater harvesting and wastewater treatment.

Somerville School has installed Rain Water Harvesting structure in the campus and the harvested rainwater is used to maintain the splendid gardens and the lush green lawns in the school campus.

सत्यमेव जयते

जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग
MINISTRY OF JAL SHAKTI
DEPARTMENT OF WATER RESOURCES,
RIVER DEVELOPMENT & GANGA REJUVENATION

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

Save water

जल है तो कल है

द्वितीय राष्ट्रीय जल पुरस्कार

के लिए
आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं।

निम्नलिखित श्रेणियों में राष्ट्रीय जल पुरस्कार हेतु प्रविष्टियां खुली हुई है।

- सर्वोत्तम राज्य
- विभिन्न श्रेणियों में सर्वोत्तम जिला
- सर्वोत्तम ग्राम पंचायत
- सर्वोत्तम नगर पालिका
- जल संरक्षण के लिए नयी तकनीक का शोध / आविष्कार एवं उपयोग
- सर्वोत्तम शिक्षा / जन जागरुकता प्रयास
- जल संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए सर्वोत्तम टेलीविजन शो
- विभिन्न श्रेणियों में सर्वोत्तम समाचार पत्र / पत्रिका
- सर्वोत्तम विद्यालय
- सफल परिसर उपयोग के लिए सर्वश्रेष्ठ संस्थान / निवासी कल्याण संघ
- विभिन्न श्रेणियों में सर्वश्रेष्ठ उद्योग
- सर्वश्रेष्ठ जल नियामक प्राधिकरण
- जल योद्धा पुरस्कार
- जल संरक्षण के लिए सर्वश्रेष्ठ गैर सरकारी संगठन
- सर्वश्रेष्ठ जल उपयोगकर्ता संघ (वाटर यूजर एसोशियसन)
- जल संरक्षण में कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (CSR) गतिविधियों के लिए सर्वश्रेष्ठ उद्योग

आवेदन प्रस्तुत करने की तारीख
30 नवम्बर 2019

आवेदन और अन्य विवरणों के लिए

www.mygov.in अथवा cgwb.gov.in पर लॉग ऑन करे

पानी की कहानी

मैंने आज पानी से सीखा
मैंने उन पहाड़ों से सीखा
पहाड़ों में पिघलते हुवे बर्फ से सीखा
बर्फ से निकलते हुवे पानी से सीखा
मैंने आज पानी से सीखा, पानी से सीखा

न सोते हैं वो, न खाते हैं वो
बस चलते रहते हैं, चलते रहते हैं

उन की खुद्दारी से सीखा
उन की ईमानदारी से सीखा
उन के देने के जज़्बे से सीखा
मैंने आज पानी से सीखा, पानी से सीखा

उन के कठिन रास्तों को देखा
रास्तों में बनाए बांधों को देखा
बांधों में बनते हुवे बिजली को देखा
फिर भी कुछ नहीं उन्हें मांगते देखा
मैंने आज पानी से सीखा, पानी से सीखा

सब भूल गए हम !
कुछ नहीं सीखा हमने पानी से?
हम से तो सिर्फ लेना सीखा
देने वालों को मारना सीखा!
मैंने आज पानी से सीखा
उनकी दर्द कहानी से सीखा
दर्द कहानी से सीखा!

नाम- मो. आफताब आलम
शिक्षक,मध्य विद्यालय कदवा,
क़सबा, ज़िला- पूर्णिया, बिहार

Share your suggestions & feedback at media-mowr@nic.in